साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 11 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 30 अक्टूबर 2024 से 5 नवंबर 2024 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

परंपरा और स्थिरता को संतुलित करना- हरित दिवाली के लिए पर्यावरण-अनुकूल विकल्प

दिवाली, रोशनी का प्रिय त्योहार, जीवंत उत्सवों, हार्दिक समारोहों और सदियों पुरानी परंपराओं के सम्मान का समय है। फिर भी, जैसे-जैसे पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ती है, कई लोग इस बात पर पुनर्विचार कर रहे हैं कि वे कैसे जश्न मनाते हैं। परंपरा को स्थिरता के साथ संतुलित करने से न केवल हमें दिवाली के सार का सम्मान करने की अनुमति मिलती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित होता है कि हमारे उत्सव ग्रह पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ें। पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को अपनाकर, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने पर्यावरण की रक्षा करते हुए खुशी से दिवाली मना सकते हैं। उपहार देना और सजाना दिवाली का अभिन्न अंग हैं, और महिलाओं के नेतृत्व वाले छोटे व्यवसायों का समर्थन करना इन परंपराओं को अर्थ देता है। हमें महिला उद्यमियों को सक्रिय रूप से सशक्त बनाना चाहिए, उन्हें ऐसे व्यवसाय बनाने और बढ़ाने में मदद करनी चाहिए जो हस्तनिर्मित सजावट, कारीगर आभूषण और जैविक घरेलू सामान जैसे पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाते हैं। हस्तनिर्मित उत्पादों, प्राकृतिक रंगोली पाउडर, जैविक धूप और पर्यावरण-अनुकूल सजावट का चयन करके महिला उद्यमियों और स्थिरता का समर्थन करें जो परंपरा और पर्यावरण दोनों का सम्मान करते हैं। पर्यावरण-अनुकूल सामुदायिक पहल- वृक्षारोपण और समुद्र तट की सफाई

वृक्षारोपण और समुद्र तट-सफाई पहल समुदाय-संचालित पर्यावरणीय कार्रवाई की शक्ति को उजागर करते हैं। इन प्रयासों से प्रेरित होकर, व्यक्ति और परिवार अपने दिवाली समारोहों में इसी तरह के कार्यों को शामिल कर सकते हैं, जैसे स्थानीय वृक्षारोपण अभियान का आयोजन करना या उसमें भाग लेना। पेड़ लगाना नई शुरुआत करने का एक सुंदर तरीका है, जो विकास और स्थिरता का प्रतीक है। समुद्र तट की सफाई पर्यावरण को वापस लौटाने का एक और प्रभावशाली तरीका है। भारत में कई समुद्र तटों को अब प्लास्टिक-मुक्त घोषित किया गया है, दिवाली के दौरान समुद्र तट की सफाई में भाग लेने या आयोजन करने से इन प्राकृतिक स्थानों को बनाए रखने में मदद मिलती है। दिवाली को न केवल रोशनी के त्योहार के रूप में

मनाया जा सकता है, बल्कि पृथ्वी को वापस लौटाने के उत्सव के रूप में भी मनाया जा सकता है। दिवाली अपने दीप्तिमान दीपों और रोशनी के लिए मनाई जाती है जो घरों और सार्वजनिक स्थानों को रोशन करती है। मिट्टी के दीये, पारंपरिक मिट्टी के तेल के लैंप, सिंथेटिक प्रकाश व्यवस्था के सुंदर, पर्यावरण-अनुकूल विकल्प के रूप में काम करते हैं। इन्हें सालाना पुन- उपयोग किया जा सकता है और अपने क्लासिक आकर्षण के साथ दिवाली की सजावट को बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, मिट्टी के दीये चुनना पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करता है, और महिला उद्यमियों से उन्हें खरीदने से उनकी आजीविका में सुधार करने में मदद मिलती है। आतिशबाजी दिवाली का एक अनिवार्य हिस्सा है, लेकिन ध्वनि और वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारण भी है। हरित पटाखे, जो कम प्रदूषक छोड़ते हैं, उन लोगों के लिए एक व्यवहार्य विकल्प हैं जो पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए आतिशबाजी का आनंद लेना चाहते हैं। दूसरा विकल्प शोर को कम करने के लिए फुलझड़ियों का उपयोग करके, ध्वनि रहित उत्सवों पर ध्यान केंद्रित करना है। इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत आतिशबाजी के बजाय संगठित, पर्यावरण-अनुकूल प्रदर्शनों में भाग लेने से समग्र पर्यावरणीय नुकसान को कम करने में मदद मिल सकती है।

त्यौहारों में प्रदूषण से खांसता देश, दिल्ली-अमृतसर सहित 12 शहरों में 300 के पार पहुंचा एक्यूआई

नई दिल्ली। दीपावली यानी प्रकाश और खुशियों का त्यौहार, लेकिन इस मौके पर साल दर साल प्रदूषण का जहर इस कदर हावी हो जाता है, कि लोगों के लिए सांस लेना तक मुश्किल हो जाता है। आतिशबाजी से लेकर वाहनों, उद्योगों से निकलता धुआं, जलता कचरा, बढ़ती धूल और मौसम में बदलाव कई ऐसे कारण हैं जो बढ़ते प्रदूषण में इजाफा करते हैं। इस साल भी कुछ ऐसा ही देखने को मिला। देखा जाए तो देश में बहुत से परिवार ऐसे हैं जहां बुजुर्ग, बीमार और नवजात बच्चे हैं, जिनके लिए बढ़ता प्रदूषण किसी अभिशाप से कम नहीं, नतीजन इस प्रदूषण से उनके त्यौहारों की खुशी फीकी पड़ जाती है। सरकारी आंकड़ों पर नजर डालें तो इस साल भी देश के कई शहरों में प्रदूषण के चलते हवा %बेहद खराब% रही। देश में जहां बढ़ते प्रदूषण से पिछले 24 घंटों में अम्बाला की स्थिति सबसे खराब रही, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 367 तक पहुंच गया। इसी तरह प्रदूषण के मामले में अमृतसर और दिल्ली भी ज्यादा पीछे नहीं रहे। ताजा रुझानों ने पुष्टि की है कि दीपावली के दिन अमृतसर में एक्यूआई 350, जबकि दिल्ली में 339 तक पहुंच गया। वहीं सुबह नौ बजे दिल्ली के कई इलाकों में प्रदूषण का औसत स्तर 400 के करीब तक पहुंच गया था। वहीं 31 अक्टूबर 2024 को जारी आंकड़ों में देखें तो दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक 328 दर्ज किया गया था। ऐसे में यदि पिछले 24 घंटों में देखें तो दिल्ली की वायु गुणवत्ता में 11 अंकों की गिरावट आई। वहीं अमृतसर में भी प्रदूषण में 214 अंकों का भारी उछाल आया है। देश के सबसे प्रदूषित शहर अम्बाला में भी 178 अंकों का इजाफा दर्ज किया गया है। ताजा रुझानों के मुताबिक देश के 12 शहरों में प्रदूषण जानलेवा स्तर तक पहुंच गया। इनमें अम्बाला, अमृतसर, दिल्ली के साथ-साथ हाजीपुर, खुर्जा, मुरादाबाद, बीकानेर, गुरूग्राम, गाजियाबाद, कुरूक्षेत्र, लखनऊ, और चंडीगढ़ शामिल थे।

ईको-फ्रैंडली दिवाली

परिवारजनों-दोस्तों के साथ मिलकर आप सोशल मीडिया का उपयोग कर लोगों को ईको फ्रैंडली दिवाली मनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इसके जरिए आप अपने दोस्तों, परिवार और फॉलोअर्स को प्रदूषण कम करने और पर्यावरण के अनुसार तरीके अपनाने के लिए जागरूक कर सकते हैं।

दिवाली मूवी मैराथन एक ऐसा तरीका है जिससे आप अपने दोस्तों और परिवार के साथ दिवाली का उत्सव मना सकते हैं। भले ही आप एक ही जगह पर न हों। ऑनलाइन मूवी नाइट का आयोजन करना एक मजेदार और यादगार अनुभव बन सकता है। मूवी नाइट में आप फैमिली और कॉमेडी मूवीज देख सकते हैं। दिवाली-थीम वाली फिल्मों के साथ वर्चुअल मूवी नाइट होस्ट कर सकते हैं। म्यूजिक स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर दिवाली-थीम वाली प्लेलिस्ट बनाएं।

डिजिटल रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन कर सकते हैं । परिवार की महिलाएं अलग-अलग होने पर भी वर्चुअल कनेक्ट करके रंगोली प्रतियोगिता कर सकती हैं। परिवार के बुजुर्ग रंगोली प्रतियोगिता का हिस्सा बनकर उनको जज कर सकते हैं। वहीं ऑनलाइन क्राफ्ट वर्कशॉप बच्चों के लिए एक शानदार अवसर है, इसमें बच्चे अपने-अपने घर में रहकर ही क्राफ्ट कर सकते हैं। इस मौके पर दिवाली स्पेशल व्यंजन और खाना पकाने के ट्यूटोरियल एक-दूसरे से साझा करें। वर्चुअल कुकिंग क्लास आयोजित करें। दोस्तों-परिवार के साथ डिजिटल दिवाली फूड फेस्टिवल मनाएं।

स्मार्ट होम डेकोर

दिवाली-थीम वाले सिंक्रोनाइज लाइटिंग इफेक्ट बनाने के लिए स्मार्ट लाइट का इस्तेमाल करें। दिवाली का संगीत और मंत्र बजाने के लिए अपने स्मार्ट स्पीकर को प्रोग्राम करें। वॉयस कमांड से अपने घर के माहौल को नियंत्रित करें।

संस्कृति का संरक्षण

त्योहारों का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व जानना महत्त्वपूर्ण है। इस दौरान हम उनका अर्थ खोजते हैं और अपने नैतिक मूल्यों को मजबूत करते हैं। इस दिवाली हम अपनी परंपराएं, मूल्य और कहानियां पीढ़ियों तक पहुंचा कर अपनी जड़ों से जुड़ाव महसूस कर सकते हैं।

सुरक्षा भी है जरूरी

दिवाली से जुड़े सुरक्षा के पहलुओं के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करना चाहिए। आपातकालीन संपर्क, जानकारी और सुरक्षा दिशा-निर्देश अपने मिलने-जुलने वालों से साझा करें। एक डिजिटल दिवाली सुरक्षा किट बनाएं।

सावधान -राजस्थान में हजारों टन केमिकल युक्त नकली सरसों जब्त

हनुमानगढ़, क्या आप यकीन करेंगे कि कुछ रसायनों के सहारे सरसों के आकार के हुबहू दाने बनाए जा सकते हैं और उन्हें कृषि मंडियों में बेचा जा सकता है। इतना ही नहीं सहकारी समितियों के माध्यम से राजस्थान राज्य भंडार व्यवस्था निगम में भी इस नकली सरसो को भेजा जा रहा है। अब तक हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, भरतपुर, मालपुरा, सीकर, बीकानेर एवं जयपुर जिलों में नकली सरसों के मामले सामने आ चुके हैं। दरअसल सरसों के दानों पर जब व्यापारियों को शक हुआ तो उन्होंने इन दानों को पानी में डालकर हिलाया और वह चकित रह गए, सारे दाने पानी में घुल गए।

ताजा मामला मामला हनुमानगढ़ जिले का है, जहां 25 अक्तूबर, 2024 को भादरा तहसील के निनाण गांव में एक तेल मिल मालिक को हरियाणा के कुछ लोग 16 क्विंटल 65 किलोग्राम नकली सरसों बेच गए। मिल मालिक रामप्रकाश को सरसों के नकली होने का पता तब चला, जब उसने उस सरसों को पहले से पड़ी सरसों में मिलाकर मशीन में डाल दिया। इससे काले रंग का तेल एवं काले रंग की खल निकली। यह तेल अच्छी सरसों में मिल जाने से करीब दस लाख रुपये का बढ़िया तेल भी खराब हो गया। मिल मालिक की रिपोर्ट पर भिरानी थाने की पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। श्रीगंगानगर जिले में सूरतगढ़ में व्यापार मंडल के अध्यक्ष संजय सोनी बताते हैं, ''29 जून को सूरतगढ़ में राजस्थान भंडार व्यवस्था निगम के गोदाम में एक ट्रक में 550 थैले सरसों लाई गई थी। हमें किसी ने सरसों के नकली होने की सूचना दी तो हमने मौके पर जा कर सरसों को पानी में डाला तो दाने घुल गए। पानी मटमैला हो गया। भला सरसों के दाने पानी में कैसे घुल सकते हैं?'' राज्य में नकली सरसों का पहला मामला इस साल अप्रैल में भरतपुर जिले के वैर कस्बे की मंडी में सामने आया। वैर में कृषि उपज मंडी समिति के सचिव घमंडीलाल मीणा बताते हैं, ''मंडी में उस दिन एक ट्रैक्टर ट्रॉली भरकर सरसों बेचने लाई गई थी। उस सरसों पर अकस्मात थोड़ा पानी गिर गया तो वह घुलने लगी। इस पर व्यापारियों ने सरसों को पानी में डाला तो वह घुल गई। पोल खुलने पर सरसों लेकर आया व्यक्ति भाग निकला। हमने इस मामले में स्थानीय पुलिस थाने में रिपोर्ट दे दी थी। इसके बाद पुलिस ही इस मामले को देख रही है।'' इसके बाद मई और जुलाई महीने में भी राजस्थान के जयपुर में ऐसा ही मामला सामने आया। श्रीगंगानगर और डीग जिले के कामां में भी नकली सरसों मंडियों में आ चुकी है। हाल में सीकर जिले के धोद पुलिस थाने में मनोज कुमार नामक व्यापारी ने नकली सरसों बेचकर धोखाधड़ी करने के आरोप में एफआइआर दर्ज कराई है। व्यापारी का आरोप है कि जयपुर की एक फर्म ने उससे ग्यारह लाख रुपये ले लिए और नकली सरसों सप्लाई कर दी। इसके अलावा जयपुर जिले के किशनगढ़ रेनवाल की कृषि मंडी में खाद्य सुरक्षा विभाग ने 125 बोरियों में भरी हुई 7 हजार 650 किलो नकली सरसों सीज की है। अतिरिक्त आयुक्त पंकज ओझा ने बताया कि जैसे ही सरसों को हाथ में लिया गया, वह मिट्टी की तरह हो गई। नमूने को जांच के लिए जयपुर में खाद्य विश्लेषण प्रयोगशाला में भिजवाया गया है। श्रीगंगानगर के प्रमुख व्यापारी और नगर विकास न्यास के पूर्व अध्यक्ष संजय महिपाल कहते हैं, ''यकीनन, इसके पीछे कोई बड़ा गिरोह सक्रिय है। वह इतने शातिर हैं कि सरसों को इस तरह बना देते हैं कि लैब में जांच कराने पर उसमें तेल की मात्रा भी पूरी आती है। इससे व्यापार और तेल मिलों के कारोबार पर संकट आएगा। सबसे बड़ा खतरा जन स्वास्थ्य पर है। यह नकली सरसों असली में मिलाकर बेची जाती रहेगी तो इससे निकला तेल लोगों के स्वास्थ्य न जाने कितने दुष्प्रभाव लाएगा।'' वह इसकी जांच के लिए एसओजी की मांग कर रहे हैं। राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड मुख्यालय में सहायक निदेशक ओमप्रकाश शर्मा कहते हैं कि कृषि उपज मंडी समितियों का काम केवल नीलामी कराना है। मंडियों में जो जिंसं आती हैं, मंडी समितियां उनकी नीलामी करा देती हैं। नकली सरसों के मामलों को खाद्य विभाग, पुलिस और प्रवर्तन विभागों को देखना चाहिए। किसानों के संगठन किसान महा पंचायत के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामपाल जाट कहते हैं, ''मैं इन मामलों को जालसाजी के कोई छोटे-मोटे मामले नहीं मानता हूं। यह 'सरसों को बदनाम करने का षड्यंत्र' है ताकि लोग सरसों को नकली मानकर उससे मुंह मोड़ लें और अन्य तेलों को भरा-पूरा बाजार मिल जाए।'' जाट कहते हैं कि 1998 में देश के उत्तरी राज्यों में ड्रॉप्सी रोग फैला था। तब तुरत-फुरत में इसके लिए सरसों के तेल को जिम्मेदार ठहरा दिया गया जबकि हकीकत यह नहीं थी। जाट कहते हैं कि हमारे देश में सरसों का तेल सदियों से खाया जा रहा है। कई कंपनियां सरसों तेल को बाजार से हटा कर सोया और अन्य तेलों को चलाना चाहती हैं। इसलिए ड्रॉप्सी के नाम पर डरा कर लोगों को सरसों तेल से दूर करने की कोशिश की गई। अब नकली सरसों भी इसी कुचक्र का हिस्सा है।

ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और वातावरण को गर्म करने में पीछे नहीं है बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक-अध्ययन

मुंबई शोधकर्ताओं ने दुनिया भर के बाजारों पर हावी होने वाले पांच प्रकार के बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक का उपयोग करके इनका परीक्षण किया, जिनमें से दो पेट्रोलियम से और तीन कार्बनिक पदार्थों से बने थे। शोध दल ने पाया कि प्राकृतिक वातावरण में इन माइक्रोप्लास्टिक के टूटने से होने वाले मीथेन का उत्सर्जन बायोमास वृद्धि से कार्बन अवशोषण की तुलना में ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाने की अधिक क्षमता होती है।

अध्ययन के मुताबिक, हर साल दो करोड़ टन से अधिक प्लास्टिक पर्यावरण में समा जाता है, जिसमें से ज्यादातर माइक्रोप्लास्टिक में टूट जाता है जो मनुष्यों और वन्यजीवों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जैविक सामग्री से बने बायोडिग्रेडेबल और बायो-आधारित प्लास्टिक को अक्सर अधिक टिकाऊ विकल्प के रूप में पेश किया जाता है। लेकिन अब तक वैज्ञानिकों के पास बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के प्रभाव का आकलन करने के लिए उपकरण नहीं थे, जिनका उचित तरीके से निपटान नहीं किया जाता है।

येल स्कूल ऑफ एनवायरमेंट में सेंटर फॉर इंडस्ट्रियल इकोलॉजी के शोधकर्ताओं की एक टीम ने हाल ही में प्राकृतिक वातावरण में बायोडिग्रेडेबल माइक्रोप्लास्टिक के जलवायु परिवर्तन और जहरीले प्रभावों को मापने के लिए एक पर्यावरणीय प्रभाव आकलन विधि विकसित की है।

नेचर केमिकल इंजीनियरिंग में प्रकाशित इस अध्ययन में कहा गया है कि केवल 50 फीसदी बायो-प्लास्टिक वास्तव में बायोडिग्रेडेबल हैं और कई बायोडिग्रेडेबल विकल्प जीवाश्म ईंधन आधारित हैं। कचरे के प्रबंधन की सुविधा की नियंत्रित स्थितियों के बाहर, बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के कुछ प्रभाव पारंपरिक प्लास्टिक जैसे ही हो सकते हैं, जिसमें छोटे टुकड़ों में टूटना शामिल है। जबकि उन्हें टूटने में कम समय लगता है, वे ग्रीनहाउस गैसों को भी छोड़ते हैं।

शोध के मुताबिक, बहुत से लोग बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक के जीवन चक्र का आकलन कर रहे हैं, लेकिन वे उस प्लास्टिक के प्रकृति में प्रवेश करने पर होने वाले प्रभावों को मापने में सक्षम नहीं हैं। इसके लिए अभी तक कोई प्रणाली उपलब्ध नहीं है।

अध्ययन के लिए टीम ने जलीय वातावरण में बायोडिग्रेडेबल माइक्रोप्लास्टिक के समाने का मॉडल बनाने के लिए मौजूदा उपकरणों में बदलाव किया, जिससे एक अधिक गतिशील विधि बनाई गई जो प्लास्टिक के टूटने के रूप में उत्सर्जन में उतार-चढ़ाव को ध्यान में रख सकती है। उन्होंने दुनिया भर के बाजारों पर हावी होने वाले पांच प्रकार के बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक का उपयोग करके इनका परीक्षण किया, जिनमें से दो पेट्रोलियम से और तीन कार्बनिक पदार्थों से बने थे। शोधकर्ता ने शोध के हवाले से कहा कि यह एक आम धारणा है कि बढ़ते बायोमास में इतनी

कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित हो जाती है कि उसे नष्ट किए गए बायो-आधारित बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक से होने वाले उत्सर्जन की भरपाई करनी पड़ती है। हालांकि शोध दल ने पाया कि प्राकृतिक वातावरण में इन माइक्रोप्लास्टिक के टूटने से होने वाले मीथेन का उत्सर्जन बायोमास वृद्धि से कार्बन अवशोषण की तुलना में ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाने की अधिक क्षमता रखता है।

अध्ययन ने यह भी दिखाया कि प्लास्टिक के टूटने की दर और माइक्रोप्लास्टिक के आकार पर निर्भर करता है। पारंपरिक विकल्पों से ऐसे विकल्पों की ओर स्थानांतरित होना जो तेजी से विघटित होते हैं, वातावरण में जहरीले पन को कम कर सकते हैं, लेकिन इसके कारण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन अधिक हो सकता है। परीक्षण किए गए सबसे छोटे आकारों के लिए, एक इंच से दस लाख गुना छोटे कण, कम बायोडिग्रेडेबल प्लास्टिक में सबसे अधिक उत्सर्जन और विषाक्तता पाई गई।

जब प्लास्टिक इंजीनियर प्लास्टिक को डिजाइन करने की कोशिश करते हैं, तो वे अक्सर सोचते हैं कि ये अधिक बायोडिग्रेडेबल या आसानी से नष्ट होने वाले होंगे। जबकि शोध के परिणाम बताते हैं कि ऐसा नहीं है। शोधकर्ताओं ने उम्मीद जताई है कि अध्ययन आगे चलकर टिकाऊ प्लास्टिक और कचरे के प्रबंधन प्रणालियों के डिजाइन करने में मदद करेगा। शोधकर्ताओं ने शोध के हवाले से कहा, इस तरह का बड़े पैमाने पर विश्लेषण करना वास्तव में महत्वपूर्ण है, ताकि यह बेहतर ढंग से समझा जा सके कि यदि प्लास्टिक उद्योग इन सभी पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना चाहते हैं तो उद्योग क्या रणनीति अपना सकते हैं।

दुनिया भर में सुर्खियां बटोर रहा ब्रिक्स शिखर सम्मेलन

मॉस्को कजान में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन ने दुनिया भर में सुर्खियां बटोरी हैं। एक ओर जहां सम्मेलन के माध्यम से रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने वैश्विक नेताओं को एकत्रित कर पश्चिमी देशों को अपनी ताकत दिखाते हुए महत्वपूर्ण संदेश दिया है। वहीं भारत और चीन के शीर्ष नेताओं के बीच हुई मुलाकात ने भी कई महत्वपूर्ण संदेश दिए हैं। खासतौर से भारत की बात करें तो इस सम्मेलन ने नई दिल्ली की भूराजनीतिक स्थिति को एक बार फिर से उजागर किया है। भारत की क्षमता, चीन के साथ बातचीत करने के साथ-साथ अमेरिका और रूस दोनों के साथ मजबूत रिश्ते बनाए रखने की, उसकी अद्वितीय राजनयिक स्थिति को दर्शाती है। रूस की बढ़ती निर्भरता के बीच, यह संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है। भारत का बढ़ता प्रभाव, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ में, उसके मध्यस्थता की भूमिका को और मजबूत करता है। ग्लोबल पॉलिटिकल रिस्क एक्सपर्ट इयान ब्रेमर ने ब्रिक्स में भारत की भूमिका की सराहना की है। उन्होंने कहा कि भारत की वैश्विक स्थिति पिछले कुछ वर्षों में काफी बेहतर हुई है। फर्स्टपोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार, ब्रेमर ने भारत के लिए ग्लोबल साउथ में इसकी भूमिका, चीन के साथ संबंध और जी7 देशों के साथ इसके रिश्तों पर चर्चा की।

प्रकृति और प्रगति में समन्वय आवश्यक-मुख्यमंत्री डॉ. यादव

वसुधा की रक्षा के लिए सभी नागरिक अपना दायित्व निभाएं

कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में जलवायु परिवर्तन के लिए वैश्विक प्रयास- भारत की प्रतिबद्धता में राज्यों का योगदान पर विमर्श और राष्ट्रीय संगोष्ठी

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पर्यावरण आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय है। वसुधा को बचाने का कर्तव्य हम सभी को निभाना है। भारत की पहचान दुनिया में प्रकृति और पर्यावरण को बचाने के संदर्भ में भी बनी है। प्रकृति और प्रगति में समन्वय आवश्यक है। प्रधानमंत्री श्री मोदी सारे विश्व में अपने सक्षम नेतृत्व से भारत की प्रतिष्ठा बढ़ा रहे हैं। पर्यावरण के प्रति उनकी चिंता इस बात से सिद्ध होती है कि वे वर्ष 2030 तक भारत द्वारा 500 गीगावाट नवकरणीय ऊर्जा के लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं। निश्चित ही हम कार्बन उत्सर्जन में एक बिलियन टन की कमी लाने में सफल होंगे। पर्यावरण की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण संकल्प है। इसकी पूर्ति के लिए राष्ट्रवासी भी सहयोग कर रहे हैं। मध्यप्रदेश नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के संकल्प के अनुसार सौर ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रदेश अधिक से अधिक योगदान देगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में जलवायु परिवर्तन के लिए वैश्विक प्रयास- भारत की प्रतिबद्धता में राज्यों का योगदान विषय पर आयोजित विमर्श सत्र एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रह थे। इसका आयोजन अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन और नीति विश्लेषण संस्थान (एग्पा) और मध्यप्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद ने नर्मदा समग्र संस्था पैरवी और सिकोइडिकोन संगठन के सहयोग से किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्तमान समय में दुनिया जिस दौर से गुजर रही है, उसमें हमारी भारतीय जीवन पद्धति, हमारी मान्यताओं और परमात्मा एवं प्रकृति से जुड़ने के हमारे मूल दृष्टिकोण का अपना महत्व सामने आता है। एक श्रेष्ठ जीवनशैली के लिए भारतीय जाने जाते हैं। खान-पान और जल की शुद्धता के लिए हम गंभीर हैं। मध्यप्रदेश पर परमात्मा की विशेष कृपा है। जहाँ हमारा देश मानवता प्रेमी है, वहीं पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता के लिए भी भारत सक्रिय है। विश्व के कल्याण के लिए भारत के उदात्त भाव से सभी परिचित हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी विश्व के देशों के लिए आशा की किरण हैं। जहाँ रूस और यूक्रेन के युद्ध की परिस्थितियां सभी के सामने हैं, वहीं इजराइल जैसे राष्ट्र जो तकनीक के उपयोग और अस्मिता के संघर्ष के लिए जाने जाते हैं, भारत के लिए इन सभी राष्ट्रों का सम्मानजनक रूख है। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि 21वीं सदी भारत की होगी। आज प्रधानमंत्री श्री मोदी और भारत की सामर्थ्य एवं पर्यावरण प्रेमी होने के दृष्टिगत हमारी प्रतिष्ठा विश्व में बढ़ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ने नर्मदा नदी और उसके तटों की पर्यावरणीय संरक्षण के लिए आवश्यक निर्णय लिए हैं। मध्यप्रदेश नदियों का मायका है। सभी नदियों की स्वच्छता और हमारे ईको सिस्टम का संतुलन बनाए रखना हमारी प्राथमिकता है। हमारी सोन नदी, पुण्य सलिला गंगा को बलिष्ठ बनाती है। गंगा बेसिन के लिए यमुना के माध्यम से चंबल और क्षिप्रा भी यही भूमिका निभाती हैं। बेतवा भी यमुना जी में जाकर मिलती है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारा विश्वास जियो और जीने दो में है। भोपाल के पास रातापानी टाइगर अभ्यारण्य है। भोपाल के पास सड़कों पर दिन में मनुष्य और रात्रि में टाइगर दिखाई देते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने आशा व्यक्त की कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी और विमर्श-सत्र से पर्यावरण से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आएंगे। उन्होंने इस वैचारिक कार्यक्रम की सफलता की कामना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप जलाकर विमर्श-सत्र का शुभारंभ किया। सत्र को नार्वे के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय विकास और पर्यावरण मंत्री और यूएनडीपी के पूर्व कार्यकारी निदेशक श्री एरिक सोलहेम ने वर्चुअल रूप से संबोधित किया।

उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश बहुत सुंदर राज्य है। इसकी हेरिटेज देखने लायक है। मध्यप्रदेश में होने वाले जलवायु संरक्षण के कार्यों का वैश्विक महत्व होगा। एग्पा के सीईओ श्री लोकश शर्मा ने कहा कि मध्यप्रदेश ने गत दो दशक से प्रगति के अनेक आयाम छुए हैं। पर्यावरण के प्रति मध्यप्रदेश सरकार गंभीर है। आगामी माह अजरबैजान में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में राज्य स्तरीय प्री-सीओपी विमर्श-सत्र का आयोजन महत्वपूर्ण है। भारत की पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता के संबंध में राज्यों की भागीदारी के संबंध में यह अपनी तरह का प्रथम विमर्श कार्यक्रम है। सरकार के साथ समाज की भागीदारी बढ़ाने और पर्यावरण के लिए प्रहरी के रूप में कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के साथ विचार-विमर्श के लिए इस विमर्श कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई।

कार्यक्रम को पैरवी संस्था के संचालक श्री अजय झा ने कहा कि सदी के अन्त तक तापमान 2.5 डिग्री तक बढ़ने की संभावना है। विज्ञान भारती, केरल के डॉ. विवेकानंद पई ने कहा कि भारत में कार्बन उत्सर्जन 1.8 टन पर केपिटा है, जो कि विश्व की एवरेज केपिटा पर 4.5 टन से कम है। सिकोईडीकोन की सचिव श्रीमती मंजूबाला जोशी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की विभीषका को रोकने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। भारतीय प्रशासनिक सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री आर.एस. प्रसाद ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से संबंधित सभी कार्यक्रम सेल्फ ड्रिबेन हो। क्लाइमेट जस्टिस जरूरी है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिक परिषद के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी ने आभार व्यक्त किया। जलवायु परिवर्तन के लिये वैश्विक प्रयास-भारत की प्रतिबद्धता में राज्य का योगदान'' विषय पर भोपाल में पहला राज्य-स्तरीय प्री-कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (सीओपी) परामर्श-सत्र में जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख लीडर्स को एक मंच पर लाने का प्रयास किया गया। भोपाल में यह आयोजन क्लाइमेट चेंज के क्षेत्र में राज्य द्वारा लिया गया एक महत्वपूर्ण कदम माना गया है। यह परामर्श मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी को एक साथ लाने के नवीन दृष्टिकोण को दर्शाता है। कार्यक्रम में 200 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय क्लाइमेट लीडर्स, शासकीय अधिकारी, पर्यावरण विशेषज्ञ और प्रतिनिधि शामिल हुए। इस विमर्श के केंद्र में मध्यप्रदेश किए जा रहे प्रयासों की विशेष चर्चा हुई, जो भारत के नेशनली डिटरमिन्ड कंट्रीब्यूशन और सतत विकास लक्ष्यों (स्छत्तह्य) को आगे बढ़ाने में महती भूमिका निभा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भोपाल के माटी शिल्पकार श्री लखन कुमार प्रजापति और श्री बबलू प्रजापति द्वारा निर्मित टेराकोटा शिल्प का अवलोकन किया। इन शिल्प में लक्ष्मी माता की प्रतिमा, दिए और अन्य शिल्प शामिल हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को श्री प्रजापति ने चहचहाती हुई गोबर और मिट्टी के मिश्रण से बनी मैजिक चिड़िया दिखाई साथ ही श्रीनाथ जी की प्रतिमा भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री प्रजापति की प्रतिभा की सराहना की। उन्होंने स्वयं भी माटी शिल्प निर्माण में भागीदारी की।

कम होने लगा रात का तापमान, पश्चिमी विक्षोभ का दिखेगा असर

इंदौर अरब सागर में बने सिस्टम का असर कम होने पर बुधवार को बारिश दर्ज नहीं हुई। दिन का तापमान 31.8 डिग्री व रात का तापमान 19.4 डिग्री दर्ज किया गया। आद्रता 46 फीसदी दर्ज की गई। रात का तापमान कम होने से अब ठंडक का अहसास होने लगा है। भारत मौसम विज्ञान केंद्र भोपाल के अनुसार मध्य पूर्व बंगाल की खाड़ी में उठे दाना चक्रवाती सिस्टम के उत्तर पश्चिम दिशा में आगे बढ़ने के आसार हैं। अभी नॉर्थ ईस्ट मानसून आ रहा है, जिसका असर मप्र सहित इंदौर में नहीं होगा। इसके प्रभाव से बादल छाए रहने का अनुमान है। आने वाले दिनों में पश्चिमी विक्षोभ का असर देखा जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008